HIN1B08a – Séance N° 20
Le mode irréel

Séquence 1 :
- तुम नहीं जाती उनके साथ ?
- मैं कहाँ जाऊँ ? यह कोई छुट्टी थोड़ी न है। आज यहाँ तो कल कहीं और। मुझसे घूमना-घामना नहीं होता। मैं तो घर पर ही ख़ुश हूँ। वैसे भी घर का ख़्याल रखने के लिए किसी को तो रहना चाहिए न।
- सिर्फ़ पहरेदारी करने के लिए तुम घर पे बैठी रहती हो?
- लड़की होते तो जानते मन्नू। वैसे भी मुझे घूमना पसंद नहीं।

Séquence 2 :
- मैं समझी तुम ख़ास हो। और तुम्हारे लिए मैं भी ख़ास हूँ। मैं समझी ... अगर मैं ख़ुदग़र्ज होती तो तुम्हारी मदद मैं कभी नहीं करती। मरने के लिए छोड़ देती। पर मैं चाहती थी कि तुम कुछ बनो।

Séquence 3 :
- उन लड़कियों को देखके बहुत खुश हुआ करते थे तुम्हारे पापा।
- नंदनी जी, अगर मैं उन ख़ूबसूरत लड़कियों को नहीं देखता तो आप कहाँ से आतीं ?
- तुमने क्या किया ! तुम्हारे पिताजी नंदनी को ढूँढकर लाए। जब उन्होंने पहली बार नंदनी को देखा, बहुत ख़ुश हुए। और कहने लगे : मुझे यह रिश्ता मंज़ूर है लेकिन दहेज देना पड़ेगा। बहू को बाबुल के घर से ढेर सारा प्यार और एक लम्बी-सी सीढ़ी लानी पड़ेगी।

Séquence 4 :
- माफ़ कीजिएगा, बुलाया तो आपने था। वह भी फ़ोन करके। वरना मैं क्यों आता ?
- I beg your pardon ! फ़ोन तो आपने किया था। मुझे तो ... मेरा क्या दिमाग़ ख़राब हो गया था कि मैं आपको बुलाती। आप मुझे समझते क्या हैं ?
- अरे यह लगता झगड़ा कर रहे हैं। मुझे तो कुछ गड़बड़ लग रहा है। यह लो तुम्हारा नारियल। मैं ही चली।
- आपने मुझे फ़ोन नहीं किया था, factory में ?
- हरगिज़ नहीं। मैं क्यों करती ? आपने फ़ोन किया था bank में। आपने बात की थी।

Séquence 5 :
- यहाँ आइए please।
- अब क्या हुआ ?
- अपना हाथ आगे कीजिए और मेरे साथ बीबी की आख़िरी ख़्वाहिश पूरी कीजिए।
- लेकिन मैं कैसे ...
- देखिए न मैं बीबी की वारिस हूँ और न आप। लेकिन अगर आप नहीं होते तो शायद मैं बीबी को यहाँ इतनी आसानी से नहीं ला पाती। अब आपका मेरी तरह बीबी के साथ एक रिश्ता बन गया है। इसलिए इस आख़िरी रस्म का हक़ सिर्फ़ मेरा नहीं आपका भी है। आइए।

Séquence 6 :
- नैना, काश मैं तुम्हें बता सकता मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ।

Séquence 7 :
काश आप कभी समझ पाते कि मुहब्बत बहुत ख़ुबसुरत होती है।